Vol 5 Issue 3 Dec 2015

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 3 | Dec - 2015

Review Of Research

फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं

धरवेश कठेरिया[1], संदीप कुमार वर्मा[2], निरंजन कुमार[3] ,नीरज कुमार सिंह[4], अविनाश त्रिपाठी[5], पंकज कुमार[6] ,पूर्णिमा झा[7] ,पद्मा वर्मा[8]
[1]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[2]सहायक प्रोफेसर, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[3]पीएच.डी. शोधार्थी, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[4]शोध सहायक (परियोजना–आईसीएसएसआर), जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[5]विद्यार्थी, एम.ए. जनसंचार, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।
[6, 7, 8] विद्यार्थी, एम.एससी. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया, जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र।

सारांश

आज भी देश की आधी आबादी को सोशल मीडिया की ताकत को समझना व सृजनात्मक इस्तेमाल करने की आवश्यकता है। फेसबुक की सकारात्मक छवि को सामने लाने का काम कुछ क्षेत्रों में दिखाई दिया है। इनमें प्रमुखता से महिला सशक्तीकरण जैसे विषयों को बल दिया जा रहा है। आज फेसबुक पर अनेक महिला लेखक, नारीवादी चिंतक, टिप्पणीकार, सामाजिक कार्यकर्ता, एक्टिविस्ट सक्रिय हैं जिनसे नए परिवेश का निर्माण हो रहा है।

फेसबुक पर अधिकतर प्रतिभागी जिनका आंकड़ा 63 प्रतिशत 1घंटा से कम समय व्यतीत करती हैं। अधिकतर फेसबुक उपयोग करने वाली प्रतिभागी फेसबुक के नियम, कानूनों से परिचित हैं। इनका आंकड़ा 47 प्रतिशत है। फेसबुक का उपयोग प्रतिभागी ज्यादातर सूचना प्राप्त करने के लिए करते हैं। फेसबुक परिवार और मित्रों से दूर नहीं करता है बल्कि फेसबुक ने रिश्तों की उपयोगिता को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। शोध में प्राप्त तथ्यों के आधार पर कह सकते हैं कि फेसबुक उपयोगकर्ता फेसबुक का सामान्य उपयोग कर रहे हैं।

शब्द–कुंजी: फेसबुक, सोशल नेटवर्किंग साइट्स, हिंसात्मक, ऑर्कुट, टाइमलाइन, अपडेट, बाजार, उपयोगकर्ता, विश्वसनीयता, सशक्तिकरण, सूचना, वर्चुअल, मनोविज्ञान, बदलाव।

शोध उपकल्पना:

- फेसबुक सूचना और विचार आदान–प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है।
- फेसबुक सामाजिक बदलाव में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।
- फेसबुक जनमत निर्माण में मददगार साबित होता है।
- फेसबुक छात्रों को अध्ययन से दूर कर रहा है।
- फेसबुक नियम, कानून से उपयोगकर्ता परिचित नहीं हैं।

अध्ययन के उद्देश्य:

- फेसबुक सूचना और विचार आदान–प्रदान का सबसे सशक्त माध्यम है का अध्ययन करना।
- सामाजिक बदलाव में फेसबुक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है का अध्ययन।
- सूचनाओं की सत्यता का आकलन एवं विश्लेषण करना।
- फेसबुक हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया है का अध्ययन करना।

•फेसबुक उपयोग संबंधी नियम, कानून की जानकारी का अध्ययन करना।

अध्ययन की सीमाएं:

अध्ययन को स्वरूप देने के लिए शोध विषय–फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं के अध्ययन में वर्धा में स्थित महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षण से जुड़े देश के विभिन्न प्रांतों से अध्ययन करने आई छात्राओं को शामिल किया गया है। इसके अन्तर्गत मुख्य रूप से बिहार, उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, दिल्ली, और उत्तर भारत के अनेक जिलों से आए छात्राओं के मतों को शोध का आधार बनाया गया है।

शोध प्रविधि एवं उपकरण:

अंतर्वस्तु विष्लेशण–

प्रस्तुत अध्ययन में विषयवस्तु से संबंधित अनेक तथ्यों का उपयोग आवश्यकतानुसार विषय की पूर्ति हेतु किया गया है। इस प्रविधि के माध्यम से विषयवस्तु से संबंधित गूढ़ रहस्यों को जानने की कोशिश की गई है।

फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं के शोध हेतु प्रश्नावली और अनुसूची का भी प्रयोग किया गया। कुछ फेसबुक यूजर से बातचीत के माध्यम से उनकी समझ और उनमें हुए परिवर्तन को भी जानने का प्रयास किया गया है।

प्रस्तावना:

जब से समाज की स्थापना हुई है तब से मनुष्य समाज में रहने वाले अन्य लोगों के साथ निरंतर संपर्क साधता रहा है। संचार की विकास यात्रा के विभिन्न पड़ाव में जनमाध्यमों की विशेष भूमिका रही है। इस कड़ी में इलेक्ट्रॉनिक जनमाध्यमों के बाद नव–जनमाध्यमों की भूमिका विशिष्ट साबित हो रही है। अनेक जनमाध्यमों के बीच नव–जनमाध्यम एक आवश्यकता के रूप में उभरा है जिसकी हिस्सेदारी अब जनमानस की रोजमर्रा की जिंदगी का आवश्यक पहलू बन गया है। वेबसाइटों पर नए समाज का उपजना उसी दिशा में उत्पन्न एक नया डिजिटल समाज है जो वास्तविक समाज का प्रबल प्रतिनिधि जैसा साबित हो रहा है। उसकी आवश्यकता ने सोशल नेटवर्किंग साइट्स की आवधारणा को जन्म दिया और सोशल नेटवर्किंग साइट्स अस्तित्व में आयीं।

दुनिया भर में अबतक हुई महत्वपूर्ण क्रांतियों में 21वीं शताब्दी में हुई सूचना एवं संचार क्रांति सबसे महत्वपूर्ण साबित हुई। सोशल नेटवर्किंग साइट्स के जरिए लोग एक दूसरे से संपर्क स्थापित करते हैं। युवा पीढ़ी के लिए यह जानकारी प्राप्त करने, मनोरंजन, तनाव से मुक्त रहने, नए लोगों से पहचान बनाने का साधन बन गया है। सोशल नेटवर्किंग साइट्स पर वह अपनी बात अपने संपर्क के लोगों के साथ साझा करते हैं। अनेकों सोशल नेटवर्किंग साइट में से फेसबुक सबसे अधिक लोकप्रिय रही है। यदि बात की जाये फेसबुक की तो यह फरवरी 2004 में लांच हुई थी। जिसने बहुत कम समय में युवाओं के बीच पहुंच बनाकर प्रसिद्धि पाई। भारत में फेसबुक उपयोगकर्ताओं के बीच स्त्री–पुरुष का अनुपात लगभग 25 और 75 का है। यह स्थिति तब है, जब भारत फेसबुक यूजर्स के मामले में दुनिया में तीसरे स्थान पर है। महानगरों में फेसबुक की लोकप्रियता शीर्ष पर है। रिसर्च फर्म सोशल बेकर्स के मुताबिक महिला फेसबुक उपयोगकर्ताओं के मामले में भारत, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के साथ खड़ा है, जहां फेसबुक पर महिला–पुरुष अनुपात क्रमशः 22 और 78 का है। जबकि नेपाल (31 फीसदी), पाकिस्तान (30 फीसदी) और श्रीलंका (32 फीसदी), इंडोनेशिया (41 फीसदी) भी भारत से आगे हैं।

भारत में फेसबुक के करीब 40 फीसदी उपयोगकर्ता 18 से 24 आयु–वर्ग के हैं, और इस उम्र की महानगरीय लड़कियां आज लड़कों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही हैं। इसके बावजूद लड़कियां सोशल मीडिया के मंचों का इस्तेमाल नहीं कर रहीं तो क्या इसके सामाजिक–आर्थिक कारण भी हैं? आज लगभग 60 फीसदी उपयोगकर्ता स्मार्टफोन के जरिए फेसबुक का इस्तेमाल कर रहे हैं। वहीं शहर में भी महिलाओं को स्मार्टफोन सहज उपलब्ध नहीं हैं? लेकिन फेसबुक और महिलाओं के रिश्तों को आंकड़ों से इतर भी पढ़े जाने की जरूरत है। सोशल मीडिया की ताकत को अब नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। लेकिन क्या महिलाएं इसे पुरुषवादी सोच के खिलाफ अपना हथियार बना सकती हैं? निश्चित रूप से यह सोचना भी आसान नहीं है। लेकिन, हाल के दिनों की कुछ घटनाएं इस दिशा में सोचने पर जोर देती हैं। उदाहरण के लिए एक घटना बेंगलुरू की है। बीते महीने वहां दो लड़कियों को बाइकसवार मनचलों ने छेड़ा और भाग गए। लेकिन उनकी तस्वीर लड़कियों के दोस्त ने फेसबुक पर पोस्ट कर दी। सिर्फ 48 घंटे के भीतर 15 हजार से ज्यादा लोगों ने उन तस्वीरों को लाइक और शेयर किया। नतीजा पुलिस ने मनचलों को गिरफ्तार कर लिया। दिलचस्प है कि भारत में महिलाओं के लिए सोशल मीडिया की उपयोगिता का सफल उपयोग फरवरी 2009 में सबसे पहले हुआ था, जब मैंगलोर में श्रीराम सेना के कार्यकर्ताओं द्वारा पब (शराब पीने का स्थान) में महिलाओं से मारपीट की घटना के बाद सोशल मीडिया पर पिंक चड्डी कैंपेन चर्चा में आया था। पत्रकार निशा सुसान की अगुआई में चले इस अभियान को हजारों लोगों ने समर्थन दिया और विरोध स्वरुप श्रीराम सेना के दफ्तर में सैकड़ों गुलाबी चिठठी पहुंची थीं। आज इस प्रकार के अनेक मामले सोशल मीडिया के मंच पर प्रतिदिन देखे जा सकते हैं। चाहें वह किसी संवेदनशील घटना–दुर्घटना की बात हो या आकर्षण और रोमांचक व दिलचस्प बात। लोग उससे तेजी से जुड़ते हैं और विस्तारित करते हैं इसीलिए उपयोगकर्ताओं ने इस प्रकार के मंच को आगे बढ़ाया है। खास बात यह है कि जुलाई 2009 में भारत में फेसबुक उपयोगकर्ता की संख्या महज 30 लाख थी, जो वर्तमान में बढ़कर सात करोड़ हो चुकी हैं। निश्चित रूप से सोशल नेटवर्किंग साइट की बढ़ती लोकप्रियता अब इसके सकारात्मक इस्तेमाल की दिशा में सोचने के लिए बाध्य करती है। भारत की कुल आबादी की तुलना में भले फेसबुक–ट्विटर यूजर्स की संख्या कुछ न हो, लेकिन अब इस संख्या के महत्व को खारिज भी नहीं किया जा सकता।

प्रभाव:

फेसबुक जैसी सोशल साइट के सृजनात्मक पहलुओं के अलावा कुछ ऐसे पहलू भी हैं जिनसे उपयोगकर्ता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से

प्रभावित भी होते रहते हैं। इनमें कुछ मामलों में सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम के अंतर्गत अपराध भी किए जाते है तो कई बार नागरिकों के सिविल अधिकारों का भी उलंघन होता है। महिलाओं के संबंध में फेसबुक का उपयोग और भी संवेदनशील हो जाता है क्योंकि महिलाओं के प्रति भारतीय समाज में अभी भी उन्मुक्त सोच स्थापित नहीं हो सकी है। इस संबंध में पिछले कुछ वर्षों में कई ऐसे उदाहरण सामने आए हैं जिनमें फेसबुक के माध्यम से विवाह, विवाह–विच्छेद, यौन उत्पीड़न, ब्लैकमेल, मानसिक उत्पीड़न करने का नया तरीका फेसबुक माध्यम को बनाया गया है। उदाहरण के लिए फर्जी प्रोफाइल बनाकर मानसिक रूप से उन्हें परेशान करना, गोपनीय फोटो और दस्तावेजों को सार्वजनिक करना, व्यक्तिगत जीवन में हस्तक्षेप, मानहानिकारक टीका–टिप्पणी, उकसाने व भड़काऊ और अनेक अव्यवहारिक विषयवस्तुएं फेसबुक मंच के लिए प्रयोग की जाती है। इन मामलों को संज्ञान में लिया जा रहा है और उपयोगकर्ताओं में जागरूकता संबंधी डिजिटल अभियान भी चलाया जा रहा है।

हालांकि आज भी देश की आधी आबादी को सोशल मीडिया की ताकत को समझना व सृजनात्मक इस्तेमाल करना होगा। फेसबुक की सकारात्मक छवि को सामने लाने का काम कुछ क्षेत्रों में दिखाई दिया है। इनमें प्रमुखता से महिला सशक्तीकरण जैसे विषयों को बल दिया जा रहा है। आज फेसबुक पर अनेक महिला लेखक, नारीवादी चिंतक, टिप्पणीकार, सामाजिक कार्यकर्ता, एक्टिविस्ट सक्रिय हैं जिनसे नए परिवेश का निर्माण हो रहा है। इसे महिला सशक्तीकरण की दिशा को सतत बल मिल रहा है। क्योंकि भारत में अभी भी यह संभव नहीं है कि महिलाएं बड़ी संख्या में सड़क पर आकर अभिव्यक्ति को मुखर हों। लेकिन फेसबुक ने नई संभावनाओं को साकार करते हुए महिलाओं की अभिव्यक्ति और उनके विचारों को बेहतर मंच प्रदान किया है जो सृजनात्मक दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कदम है।

तथ्य विष्लेशण एवं आंकड़ों का प्रस्तुतीकरणः

विषय–फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं को पूर्ण करने हेतु प्रश्नावली और अनुसूची के माध्यम से तथ्यों का संकलन किया गया है। शोध में 150 से अधिक प्रश्नावली और अनुसूची के माध्यम से प्राप्त तथ्यों में से सौ मतों के विश्लेषण को रखा गया है। प्रश्नावली में कुल 15 प्रश्नों को रखा गया है। जिनमें विभिन्न प्रकार के विकल्प दिए गए हैं। जिससे अध्ययन हेतु अलग–अलग मत प्राप्त हुए हैं। प्रस्तुत शोध से कुछ महत्वपूर्ण एवं उपयोगी तथ्यों का चित्रमय प्रस्तुतीकरण किया गया है। जो इस प्रकार है–

प्रश्न.1. आप फेसबुक का इस्तेमाल कितने वर्षों से कर रहीं हैं? उक्त प्रश्न के संदर्भ में विभिन्न प्रकार के मत प्राप्त हुए। 1वर्ष से कम 20, 1वर्ष 4, 2वर्ष 11, 3वर्ष 16, 4वर्ष 26, 5वर्ष 15 एवं 5वर्ष से अधिक 8 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। यहां महत्वपूर्ण बात यह है कि चार वर्ष से अधिक उपयोग करने वालों की संख्या सबसे ज्यादा है। परंतु उससे नजदीक ही 1वर्ष से कम उपयोग करने वालों की संख्या 20 प्रतिशत है। प्रस्तुत आंकड़े इस ओर भी ध्यान आकर्षित करते हैं कि 4 वर्ष से अधिक उपयोग करने वालों की संख्यां में सिर्फ 6 प्रतिशत का ही अंतर देखने को मिलता है। कहना गलत नहीं होगा कि 2015 का वर्ष सूचना क्रांति में महत्वपूर्ण परिवर्तन को दर्शाता है। फेसबुक उपयोगकर्ताओं में वृद्धि का एक महत्वपूर्ण कारण मोबाइल क्रांति को भी माना जा रहा है। यह क्रांति विशेष रूप से 2014–15 में देखने को मिलती है। जब उपभोगताओं के हाथ में सामान्य मोबाइल एन्ड्रायइड मोबाइल के रूप में स्मार्ट फोन में बदल जाता है।

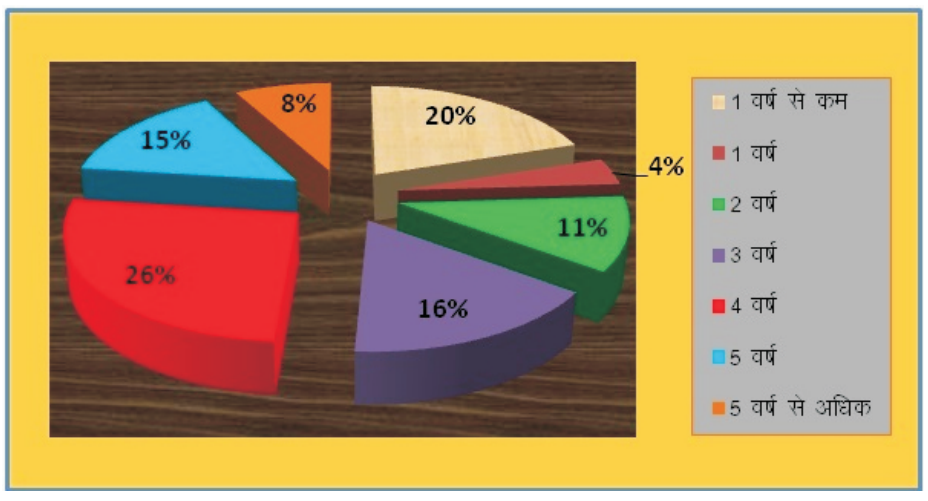

प्रश्न.2. एक दिन में आप फेसबुक पर कितना समय व्यतीत करतीं हैं? के संदर्भ में 1घंटा से कम उपयोगकर्ताओं की संख्या 63 प्रतिशत है वहीं 5घंटा उपयोग करने वालों की संख्या 0 प्राप्त होती है और 5घंटा से अधिक में 1, अन्य विकल्पों में 1घंटा 23, 2घंटा 10, 3घंटा 3 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। सामान्य उपयोगकर्ताओं की दृष्टि से करीब 86 प्रतिशत आंकड़े 1घंटा के आसपास प्राप्त होते हैं। तथ्यों के आधार पर हम कह सकते हैं कि फेसबुक उपयोगकर्ता फेसबुक का सामान्य उपयोग कर रहे हैं।

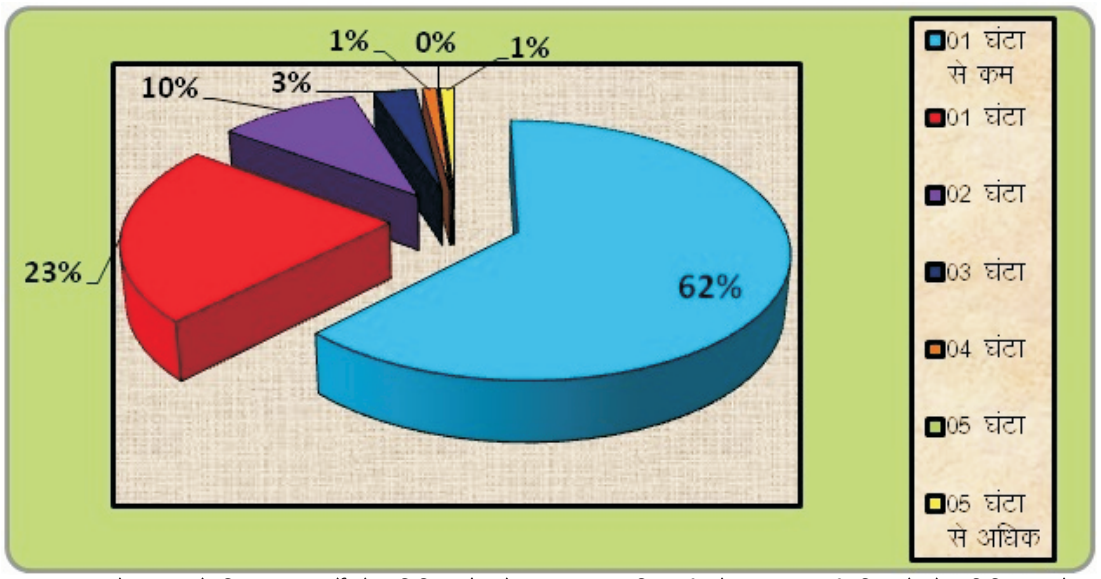

प्रश्न.3. क्या आप फेसबुक के नियम व शर्तों से परिचित हैं? में ज्यादातर प्रतिभागी फेसबुक संबंधी नियमों से परिचित पाये जाते हैं जिसका प्रतिशत 47 है। 15 प्रतिशत प्रतिभागी फेसबुक उपयोकर्ता होने के वाबजूद भी नियम, कानूनों से अनभिज्ञ हैं। जबकि 37 प्रतिशत प्रतिभागी कुछ नियमों को जानते हैं। फेसबुक उपयोगर्ताओं में यह बात देखने को मिलती है कि वे किसी भी रूप में केवल फेसबुक का इस्तेमाल करना चाहते हैं न की फेसबुक के संबंध में नियम कानूनों की जानकारी बढ़ाने में।

प्रश्न.4. क्या आप फेसबुक का उपयोग करती हैं? उक्त के संदर्भ में 34 प्रतिशत प्रतिभागी फेसबुक का इस्तेमाल सामाजिक सरोकार के लिए करते हैं। जबकि 34 प्रतिशत जानकारी बढ़ाने के लिए, 21 प्रतिशत समय बिताने के लिए, व्यक्तिगत अभिव्यक्ति के लिए 16 प्रतिशत, भ्रष्टाचार मिटाने के लिए 4 प्रतिशत एवं अधिक से अधिक मित्र बनाने के लिए केवल 1 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। 1 प्रतिशत मत आश्चर्यचकित करते हैं क्योंकि प्रारंभिक दिनों में फेसबुक का उपयोग हम केवल मित्रों की संख्या बढ़ाने के लिए करते थे परंतु आज यह माध्यम समाज के अन्य महत्वपूर्ण विषयों में अपनी सशक्त पैठ बनाए हुए है।

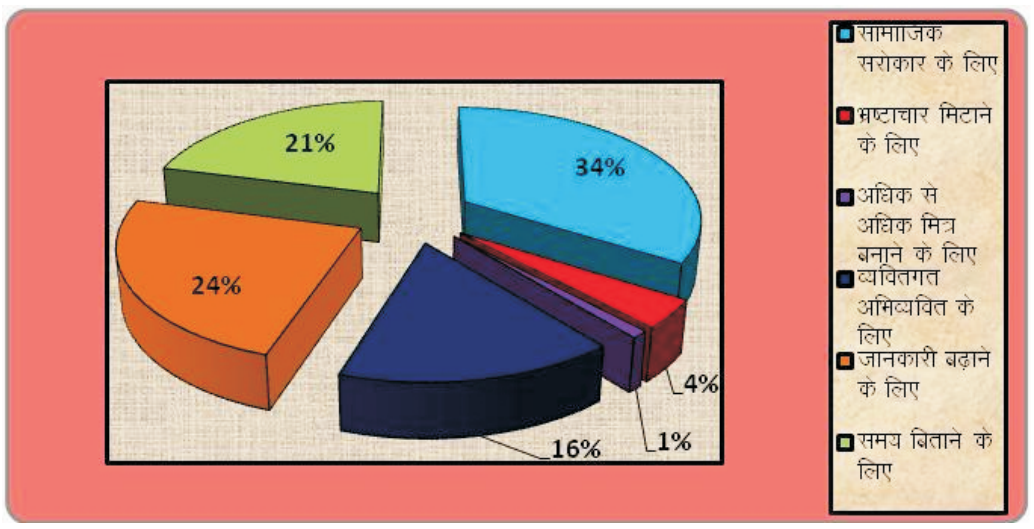

प्रश्न.5. क्या फेसबुक सामाजिक मुद्दों पर राय/जनमत बनाने में सक्षम हैं? हां के संदर्भ में फेसबुक 48 प्रतिशत मतों के साथ सामाजिक मुद्दों पर राय/जनतम बनाने में सफल हो रहा है। इस संदर्भ में नहीं का मत केवल 6 प्रतिशत, थोड़ा–बहुत 38 प्रतिशत एवं पता नहीं के अन्तर्गत 8 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। प्रश्न.6. आप फेसबुक का उपयोग क्यों करतीं हैं? कृपया क्रम (1,2,3,4) बताएं। फेसबुक की उपयोगिता के संदर्भ में अनेक प्रकार के क्रम निर्धारण प्राप्त हुए। इस संदर्भ में फेसबुक का सबसे ज्यादा उपयोग 55 प्रतिशत मतों के साथ सूचना प्राप्त करने लिए किया जा रहा है। 18 प्रतिशत मत मित्रों से चैट करने के लिए, 13 प्रतिशत मत विचारों के आदान–प्रदान हेतु एवं 14

प्रतिशत मत जनसंपर्क बढ़ाने के लिए कर रहे हैं। फेसबुक माध्यम तथ्यों के आधार पर वर्तमान समय में सूचना प्राप्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। प्रश्न.7. क्या फेसबुक ने विचारों के आदान–प्रदान में क्रांति लाने का काम किया है? के संदर्भ में फेसबुक 51 प्रतिशत मतों के आधार पर विचारों के आदान–प्रदान में सशक्त भूमिका अदा कर रही है। नहीं के अन्तर्गत 8, थोड़ा–बहुत 36 एवं पता नहीं में 5 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। कहना गलत नहीं होगा कि वर्तमान समय में फेसबुक लोगों के विचारों में परिवर्तन ला रहा है। इसका मुख्य कारण है कि फेसबुक वाल के माध्यम से लोग एक–दूसरे के क्रांतिकारी विचारों से परिचित हो रहे हैं।

प्रश्न.8. क्या फेसबुक आपको सामाजिक मुद्दों से अवगत कराता है? 67 प्रतिशत आंकड़े यह दर्शाते हैं कि फेसबुक सामाजिक मुद्दों से अवगत कराता है अन्य विकल्पों के अन्तगर्त प्राप्त आंकड़े नहीं में 2 प्रतिशत, थोड़ा–बहुत में 25 प्रतिशत एवं पता नहीं में 6 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। संचार के सशक्त माध्यम के रूप में फेसबुक की महत्ता बढ़ती जा रही है। यही कारण है कि फेसबुक पर लोग धीरे–धीरे विश्वास कर रहे हैं।

प्रश्न.9. क्या आपकी नजर में सामाजिक परिवर्तन के लिए फेसबुक का योगदान महत्वपूर्ण है? के संदर्भ में हां और थोड़ा–बहुत के अन्तर्गत 42 और 41 प्रतिशत आंकड़े सामाजिक परिवर्तन में फेसबुक के योगदान को साकार करते नजर आते हैं। तथ्य दर्शाते हैं कि फेसबुक सामाजिक परिवर्तन जैसे मुद्दे पर अपनी भूमिका को महत्वपूर्ण रूप में प्रस्तुत कर रहा है। अन्य विकल्पों के रूप में प्राप्त आंकड़े नहीं और पता नहीं की भूमिका को नकार रहे हैं। प्रश्न.10. क्या फेसबुक आपको किताबों से दूर करता जा रहा है? 54 प्रतिशत नहीं के अन्तर्गत प्राप्त आंकड़े यह दर्शाते हैं कि आज की युवतियां जितना फेसबुक के करीब नजर आती हैं उससे अधिक वह किताबों के पास भी है। हां और थोड़ा–बहुत के अन्तर्गत 21 व 24 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। जबकि पता नहीं के अन्तर्गत केवल 1 प्रतिशत ही प्राप्त होता है। आंकड़े दर्शाते हैं कि आज की युवतियां अपने कैरियर और अध्ययन के प्रति सजग और ईमानदार हैं क्योंकि उन्हें अपने सपनों को साकार और मूर्त रूप देना है।

प्रश्न.11. क्या फेसबुक के कारण आप अपने परिवार, मित्र, संबंधी से दूर होती जा रही हैं। के संदर्भ में 79 प्रतिशत आंकड़े दर्शाते हैं कि फेसबुक परिवार, संबंधी और मित्रों से दूर नहीं करता है। थोड़ा–बहुत और पता नहीं के अन्तर्गत 12 और 4 प्रतिशत आंकड़े उक्त प्रश्न के अंतर्गत महत्व नहीं रखते हैं। जबकि हां के अन्तगर्त केवल 5 प्रतिशत मत ही प्राप्त होते हैं। आज की युवतियां फेसबुक माध्यम को परिवार और मित्रों के बीच में बड़ा ही संतुलित उपयोग कर रही हैं।

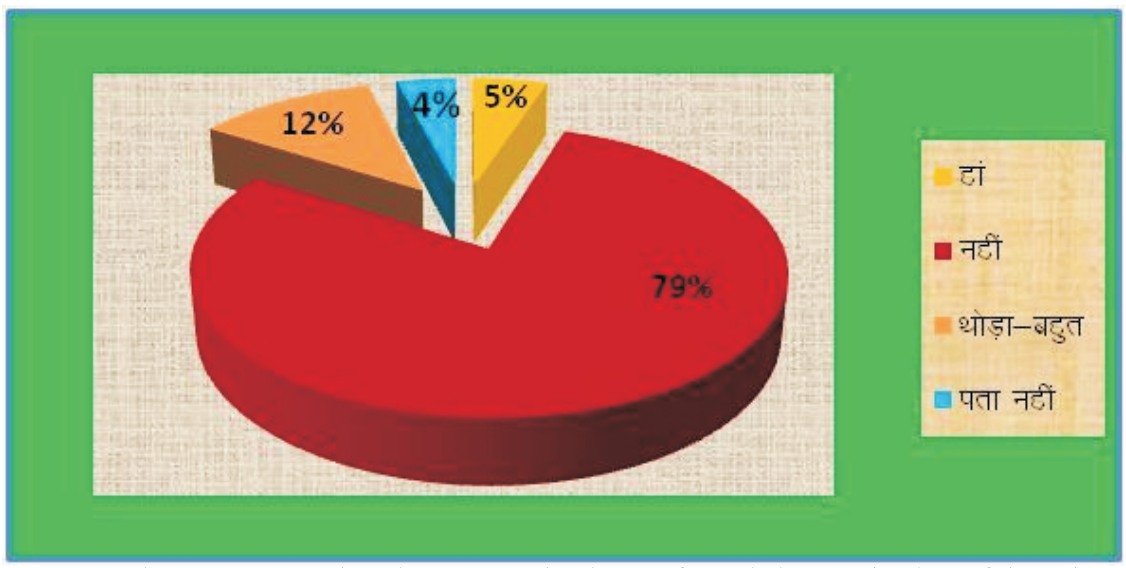

प्रश्न.12. क्या फेसबुक व्यक्तिगत सोच को सामाजिक सोच में परिवर्तित करने में सक्षम है? के संदर्भ में सबसे ज्यादा मत थोड़ा–बहुत के पक्ष में 40, हां के पक्ष में 37, नहीं के पक्ष में 16 और पता नहीं के पक्ष में 7 प्रतिशत लोगों का मानना है कि फेसबुक व्यक्तिगत सोच को सामाजिक सोच में परिवर्तित करने में सक्षम है। आंकड़े फेसबुक माध्यम की महत्ता को दर्शाते हैं कि आज किस तरह यह माध्यम हमारी सोच को प्रभावित और बदलने में कामयाब हो रहा है। कई संदर्भों में हम न चाहते हुए बिना किसी सोच–विचार के फेसबुक वाल पर हुए पोस्ट पर अपनी सहमति जता देते हैं। प्रश्न.13. क्या आपने फेसबुक पर अनैतिक, समाज व कानून विरोधी विषयवस्तु को देखा है? प्रस्तुत 26 प्रतिशत आंकड़े नहीं के अन्तर्गत प्राप्त होते हैं। जबकि अन्य विकल्पों के अन्तर्गत प्राप्त आंकड़े अनैतिक, समाज व कानून विरोधी विषयवस्तु को देखने के पक्ष में मानहानी, अपमानसूचक 18, अश्लील विषयक 13, हिंसा और द्वेष के उत्प्रेरक विषय 24 व किसी धर्म, जाति आदि के उपेक्षा के संदर्भ में 19 प्रतिशत मत प्राप्त होते हैं। उक्त प्रश्न के संदर्भ में प्राप्त आंकड़ों में विविधता देखने को मिलती है। मतों की विविधता मानवीय स्वभाव के मनोविज्ञान को प्रस्तुत करती है।

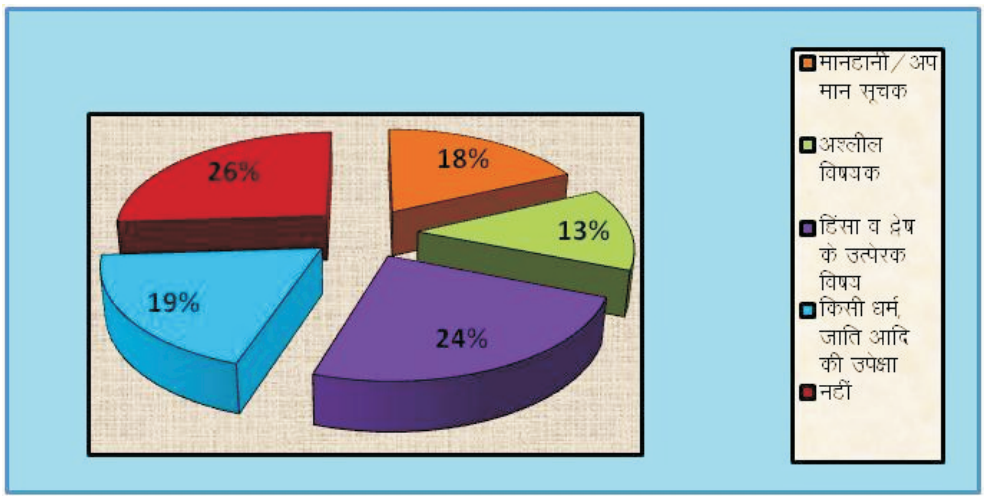

प्रश्न.14.फेसबुक पर किए गए पोस्ट और कमेंट किस प्रकार के होते हैं? 43 प्रतिशत आंकड़े फेसबुक वाल पर किए गए पोस्ट को सामान्य मानते हैं। जबकि 10 प्रतिशत उसे उम्दा और पढ़ने योग्य की श्रेणी में रखती हैं। व्यक्तिगत और लोकप्रियता संबंधी 27 प्रतिशत और मनोरंजन के लिए 20 प्रतिशत मत ही प्राप्त होते हैं। फेसबुक वाल पर प्राप्त होने वाले कमेंट सामान्य पाए जाते हैं।

प्रष्न.15.फेसबुक के संबंध में अपने विचार दें:

फेसबुक के संदर्भ में प्रतिभागियों से विभिन्न प्रकार के विचार प्राप्त हुए– कुछ प्रतिभागी जहां फेसबुक को वर्तमान समय में अकेलापन का साथी मानती हैं वहीं कुछ इसे दुनिया से जुड़े रहने का सशक्त माध्यम मानती हैं तो कुछ ऐसी प्रतिभागी भी देखने को मिलती हैं जो फेसबुक को केवल आभाषी दुनिया के रूप में देखती हैं। इसलिए वह फेसबुक को केवल मनोरंजन तक सीमित रखती हैं। कुछ प्रतिभागियों के अनुसार यह माध्यम उनके कैरियर निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है। कुछ प्रतिभागी फेसबुक को सामाजिक मुद्दों के साथ जोड़कर देखती हैं और इस माध्यम को प्रभावशाली कहने से भी नहीं चूकती हैं। इस प्रकार इस माध्यम के संदर्भ में विभिन्न प्रतिभागियों से विविध प्रकार के मत प्राप्त होते हैं। जो इस प्रश्न में रोचकता भरने का काम करते हैं।

निश्कर्श:

अध्ययन में प्रतिभागियों से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार विषय– फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं
के संदर्भ में तथ्यों और आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर प्राप्त निष्कर्षों का विवरण इस प्रकार है–

- फेसबुक उपयोग करने वाली अधिकतर प्रतिभागी 4 वर्ष के करीब हैं।
- फेसबुक पर अधिकतर प्रतिभागी जिनका आंकड़ा 63 प्रतिशत है 1घंटा से कम समय व्यतीत करती हैं।
- अधिकतर फेसबुक उपयोग करने वाली प्रतिभागी फेसबुक के नियम, कानूनों से परिचित हैं। इनका आंकड़ा 47 प्रतिशत है।
- अधिकतर प्रतिभागी फेसबुक का उपयोग सामाजिक सरोकार के लिए करती हैं। जिनका प्रतिशत 34 है। जबकि इसी में जानकारी बढ़ाने के लिए 24 प्रतिशत प्रतिभागी इस माध्यम का उपयोग करती हैं।
- 48 प्रतिशत प्रतिभागियों का मत है कि फेसबुक सामाजिक मुद्दों पर जनमत निर्माण करने में सक्षम है।
- अधिकतर प्रतिभागी फेसबुक का उपयोग सूचना प्राप्ति के लिए करती हैं। जिनका प्रतिशत करीब 55 है। जबकि मित्रों से चैट करने के लिए केवल 13 प्रतिशत प्रतिभागी ही अपनी सहमती जताती हैं। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि आज की युवतियां फेसबुक का उपयोग सामाजिक मुद्दों एवं अन्य महत्वपूर्ण विषयों के संदर्भ में अधिक करतीं हैं।
- विचारों के आदान–प्रदान के लिए फेसबुक को सशक्त माध्यम की संज्ञा दी गई है।
- 67 प्रतिशत प्रतिभागी इस माध्यम की भूमिका सामाजिक मुद्दों से अवगत कराने में महत्वपूर्ण समझती हैं।
- लगभग 80 प्रतिशत फेसबुक उपयोगकर्ता सामाजिक परिवर्तन के लिए इस माध्यम के योगदान को मानती हैं। यहां यह कहना कदापि गलत नहीं होगा कि वर्तमान समय में फेसबुक सामाजिक परिवर्तन का अंग है। यह माध्यम समाज में नई सोच और विचारों को जन्म दे रहा है। खासकर सामाजिक कुरूतियां, महिला उत्पीड़न आदि जैसे समस्याओं को कम करने में महत्वपूर्ण माध्यम बन रहा है। आज की महिला इस माध्यम से खुद को जागरूक और शक्तिशाली बना रही हैं। इस संदर्भ में फेसबुक उपयोगकर्ताओं के आंकड़े भी इस बात की पुष्टि करते हैं। आज पुरुषों की अपेक्षा महिला उपयोगकर्ताओं की संख्या तेजी से बढ़ रही है।
- यह माध्यम आज युवतियों को अध्ययन सामाग्री से दूर नहीं बल्कि उन्हें अध्ययन हेतु सहयोग करने में ज्यादा सक्षम एवं उपयोगी साबित हो रहा है।
- फेसबुक परिवार और मित्रों से दूर नहीं करता है बल्कि फेसबुक ने रिश्तों की उपयोगिता को और भी महत्वपूर्ण बना दिया है। इस माध्यम के जरिए आज हम अपनों के साथ हरपल उनसे जुड़े हुए हैं।

- फेसबुक पर अनैतिक, समाज व कानून विरोधी विषयवस्तु को देखना लगभग समस्त प्रतिभागी स्वीकार करते हैं।
- फेसबुक पर उपयोगकर्ताओं द्वारा किए जा रहे कमेंट्स को लगभग सामान्य श्रेणी में रखा जाता है।

सुझावः

उक्त अध्ययन के आधार पर निम्नलिखित सुझाव दिए जा सकते हैं–

- फेसबुक के उपयोग में महिलाओं को सावधानी बरतनी चाहिए।
- फेसबुक पर व्यक्तिगत जानकारियों को शेयर न करें।
- अपने प्रोफाइल की जानकारी मित्र समूह तक ही सीमित करें।
- मित्र समूह से चैट करते समय अनावश्यक आ रहे बाहरी संदेशों का जबतक आवश्यक न हों उत्तर न दें।
- फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करते समय तस्वीर, आचार–विचार और धर्म विशेष पर गहनता से अध्ययन आवश्यक है। पिछले कुछ वर्षों में अनेकों मामले देखने को मिले हैं जिनमें धर्म विशेष से जोड़कर देखा गया। उनमें यह भी बात निकल कर आती है की कई युवा–युवतियों के द्वारा अपनी धार्मिक पहचान बदलकर फेसबुक प्रोफाइल बनाया गया था। अतः फ्रेंड रिक्वेस्ट स्वीकार करते समय सावधानी और सजग रहने की आवश्यकता है।
- फेसबुक घरेलू महिलाओं के लिए सूचना केंद्र बन गया है लेकिन इसका उपयोग फ्री समय में ही करें।
- फेसबुक का उपयोग ज्यादा करने से आप अपने परिवार से दूर हो रही हैं। जिससे आपके स्वभाव में परिवर्तन हो सकता है।
- फेसबुक पर दिया जाने वाला ज्यादा समय आपके पारिवारिक दायित्वों को प्रभावित करता है।
- फेसबुक उपयोग करते समय नियम, कानून का ध्यान जरूर रखें।

षोध की उपयोगिता एवं भविश्य में षोधः

प्रस्तुत विषय फेसबुक का उपयोग, दायित्व और सीमाएं के माध्यम से वर्तमान समय में फेसबुक की उपयोगिता, प्रभाव, दायित्व, सीमाएं और उसके महत्व को ध्यान में रखा गया है। शोध के माध्यम से यह ज्ञात करने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान समय में फेसबुक उपयोग से उपयोगकर्ता में किस तरह का बदलाव देखने को मिल रहा है। प्रस्तुत अध्ययन फेसबुक के उपयोग में सावधानी बरतने में सहायक होने के साथ–साथ फेसबुक के संबंध में उपयोग संबंधी जानकारी और सजगता के संबंध में महत्वपूर्ण विचार शामिल किए गए हैं।

अध्ययन में अनेक निष्कर्ष एवं सुझाव दिए गए हैं जिनके आधार पर फेसबुक उपयोग करने की दिशा तय की जा सकती है। अध्ययन में फेसबुक उपयोगकर्ताओं को फेसबुक के संबंध में विभिन्न प्रकार की जानकारियों से रूबरू कराया गया है।

सहायक संदर्भ सूचीः

•जोशी पूरनचंद्र, संस्कृति विकास और संचार क्रांति, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

•पारख जवरीमल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

•चॉमस्की नोम, जनमाध्यमों का मायालोक, प्रकाशक– ग्रंथ शिल्पी (इंडिया) प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली।

•कुमार सुरेश, इंटरनेट पत्रकारिता, प्रकाशक– तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली।

•Issar Devendra,'Communication Mass Media and Development', Unique Publication, Delhi.

•Syed M.H. Encyclopedia of Modern Journalism and Mass Media, Anmol Publication, New Delhi, 2005.

•Kumar Keval J, 'Mass Communication in India', Jaico Publishing House, India.

•Bhaduri Amit, 'Development with Dignity', National Book Trust, New Delhi.

•Hargreaves Ian, 'Journalism', Oxford University Press.

•Joshi P.C., Communication and National Development, Anamika Publishers & Distributors (P) Ltd., 2002, New Delhi 110002, India.

•Hill Chistopher, The Century of Revelution, 2002, Routledge publication, New York.

•Day Louis Alvin, Media Communication Ethics, 2006, Cengage Learning India Private Limited, Delhi 100092, India.

•Lister Martin, Jon Dovey and others, New Media : A Critical Introduction, 2009, Routledge publication, New York.

Potter, W James, Media Literacy, 2011, Sage publication, New Delhi.

पत्रिका संदर्भः

•Lensight, Publisher- Film and Television Institute of India, Pune.

•Communication Today, Publisher- Prof. Dr. Sanjeev Bhanawat, Jaipur, Rajshthan.
•Media Mimansa, Publisher- MCNMC University, Bhopal, Madhya Pradesh.
•Media Vimarsh, Publisher/Editor- Dr. S. Singh, Raipur, Chhattisgarh.

रिपोर्ट:
•UNESCO Global Study On Media Violence.
•Deloitte, facebook's global economic impact- A reports for facebook, January 2015.

बेवसाइट संदर्भ:
1.www.facebook.com
2.https://en.wikipedia.org/wiki/Facebook
3.http://www.ftiindia.com/hindisite/index.html
4.www.wikipedia.org/wiki/social/media
5.www.wikipedia.org/wiki/social/impact
6. www.socialbakers.com
7.www.countercurrents.org
8.www.oup.com
9.www.wikipedia.org/wiki/social/change
10.www.social media dictionary.com/definition
11.http://mediavimarshindia.blogspot.in/
12.http://www.deloitte.com

फोटो संदर्भ:
1https://www.google.co.in/search?q=idea+data+plans+maharashtra+cheek+no&espv=2&biw=1366&bih=610&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ved=0ahUKEwi3nqmfkMLJAhUHCo4KHZKRDgoQ_AUICSgE#tbm=isch&q=women+facebook+user+and+effects&imgrc=rngwEU1to6NxpM%3A
2https://www.google.co.in/search?q=idea+data+plans+maharashtra+cheek+no&espv=2&biw=1366&bih=610&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ved=0ahUKEwi3nqmfkMLJAhUHCo4KHZKRDgoQ_AUICSgE#tbm=isch&q=women+facebook+user+and+effects&imgrc=f0WkKa1HCCd_DM%3A
3https://www.google.co.in/search?q=idea+data+plans+maharashtra+cheek+no&espv=2&biw=1366&bih=610&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ved=0ahUKEwi3nqmfkMLJAhUHCo4KHZKRDgoQ_AUICSgE#tbm=isch&q=facebook+effects&imgrc=eDGZMnCpRTPVmM%3A
4https://www.google.co.in/search?q=idea+data+plans+maharashtra+cheek+no&espv=2&biw=1366&bih=610&source=lnms&tbm=isch&sa=X&ved=0ahUKEwi3nqmfkMLJAhUHCo4KHZKRDgoQ_AUICSgE#tbm=isch&q=facebook+effects&imgrc=C6HgN9uDU4hinM%3A

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org